موضوع الخطبة :خصائص يوم عرفة

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

अ़रफा के दिन की विशेषताएं

प्रथम उपदेश:

إن الحمدلله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله.

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला के डरो और उसका भय अपने **हृदय** में जीवित रखो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जान लो कि मख़लूक़ों(जीवों)पर अल्लाह की रोबूबियत का एक दृश्य यह भी है कि वह जिस मखलूक को चाहता है,महत्वपूर्ण बनादेता है,चाहे वह मखलूक़(जीव)कोई व्यक्ति हो,अथवा स्थान हो,अथवा समय हो,अथवा प्रार्थना हो,उसके पीछे कोई नीति होती है जिसे वही पवित्र व प्रतिष्ठा वाला अल्लाह जानता है, अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وربك يخلق ما يشاء ويختار ما كان لهم الخيرة﴾

अर्थातःआपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसका चाहता है चयन करलेता है।

हम इस उपदेश में इंशाअल्लाह बात करेंगे कि अल्लाह ने अ़रफा के दिल को किन महत्वों और किन दस विशेषताओं से सम्मानित किया है।

1.प्रथम विशेषताःअ़रफा का दिन,इस्लाम धर्म पूरा होने एवं आशीर्वाद के पूरे होने का दिन है,ता़रिक़ बिन शेहाब से वर्णित है कि एक यहूदी उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ीअल्लाहु अंहु के पास आया और उनसे कहाःए मोमिनों के शासक!तुम्हारी पुस्तक(कुरान)में एक ऐसी आयत है जिसे तुम पढ़ते

रहते हो,यदि वह आयत हम यहूदियों पर नाज़िल होती तो हम उस दिन ईद का दिन बना लेते।ह़ज़रत उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहु ने कहाःवह कौन सी आयत है?यहूदी बोलाःयह आयतः

﴿اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام ديناً﴾

अर्थातःआज मेंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूरा कर दिया और तुम पर अपना आशीर्वाद पूरा कर दिया और इस्लाम धर्म को तुम्हारे लिए पसंद कर लिया।

ह़ज़रत उ़मर ने कहाः"हम उस दिन और उस स्थान को जानते हैं जिसमें यह आयत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई।यह आयत शुक्रवार के दिन उतरी जब आप अ़रफात में खड़े थे"।[1]

2.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह तआ़ला ने कुरान में दो स्थानों पर इसकी क़सम खाई है,अल्लाह तआ़ला बड़ी चीज की ही क़सम खाता है,अल्लाह तआ़ला के इस कथन में مشهود का अर्थ यही दिन हैः﴿وشاهد ومشهود﴾,अतःअबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(شاهد का अर्थ शुकर्वार का दिन और مشهود का अर्थ अ़रफा का दिन और موعود का अर्थ क़यामत का दिन है)इसे अह़मद (7973)ने वर्णित किया है और''अलमुस्नद''के शोधकर्ताओं ने उसे सही कहा है।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह के कथन ﴿والشفع والوَتر﴾ में الوَتر का अर्थ भी अ़रफा का दि नही है,जाबिर रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः आयत में العَشر का अर्थ जुलह़िज्जा के दस दिन हैं,

الوتر का अर्थ अ़रफा का दिन और الشفعका अर्थ क़ुर्बानी का दिन है।[2]

---

[1] इसे बोखारी(45)और मुस्लिम(3016)ने त़ारिक़ बिन शेहाब से वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम ने वर्णित किया है,लाभ के लिए यह भी जान लें कि मोह़म्मद बिन जरीर त़बरी ने अपनी तफसीर(व्याख्या)में इस आयत का व्याख्या करते हुए कअ़ब अह़बार का यह कथन वर्णित किया हैःयदि इस उम्मत के अतिरिक्त और उम्मत पर यह आयत नाज़िल होती तो वह उस दिन का अति ख्याल करते और उसे अपनी ईद बना लेते और **इकठ्ठा** होकर इसका त्योहार मनाते,ह़ज़रत उ़मर ने कहाःए कअ़ब!यह कोनसी आयत है?उन्होंने कहा :(اليوم أكملت لكم دينكم)ह़ज़रत उ़मर ने कहाःमुझे उस दिन का ज्ञान है जिस दिन यह आयत नाज़िल हुई,उस स्थान का भी ज्ञान है जहां यह नाज़िल हुई,शुक्रवार के दिन,अ़रफा के मैदान में यह आयत नाज़िल हुई,और यह दोनों ही हमारे लिए ईद हैं,अलह़मदोलिल्लाह।

[2] इसे अह़मद(14511)ने वर्णित किया है और"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं ने ह़सन कहा है

3.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि उस दिन का उपवास दो वर्ष के पापों का **कफ्फीरा** (प्रायश्चित) है,अबू क़तादा से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"अ़रफा के दिन का उपवास,में अल्लाह से आशा रखता हूं कि पिछले वर्ष और अगामी वर्ष के पापों का **कफ्फीरा** (प्रायश्चित)बन जाएगा" ।[3]

4.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि वह हुरमत के माहीनों में होता है,उससे पूर्व भी हुरमत(सम्मान) वाला महीना आता है और उसके पश्चात भी हुरमत(सम्मान)वाला महीना आता है।

5.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि वह नरक से मुक्ति का दिन है,उस दिन अल्लाह(बंदों से)निकट होता है,और अल्लाह तआ़ला देवदूतों के सामने अ़रफा में वोकूफ(ठहराउ)हुए ह़ाजियों पर फख़्र(गर्व) करता है,यह तीन विशेषताऐंहैं जिनका उल्लेख एक ही ह़दीस में आया है,अतःह़ज़रत आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"अल्लाह तआ़ला अ़रफा के दिन से अधिक किसी और दिन बंदों को आग से स्वतंत्र नहीं करता।अल्लाह तआ़ला(बंदों से)निकट होता है,फिर और निकट होता है,फिर उनके कारण से देवदूतों के सामने फखर करता है और कहता है:यह लोग क्या चाहते हैं?" ।[4]

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन अलआ़स रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःअल्लाह तआ़ला अ़रफा के संध्या में वोकूफ(ठहराउ)हुए ह़ाजियों पर देवदूतों के सामने गर्व प्रकट करता है और कहता है:देखो!मेरे बंदे बिखरे बाल एवं प्रदूषित(अर्थात यात्रा की कठिनाई झेल करके)मेरे दरबार में उपस्थित होगए।[5]

इब्ने रजब रह़ीमहुल्लाहु फरमाते हैं:अ़रफा का दिन नरक से मुक्ति का दिन है,उस दिन अल्लाह तआ़ला अ़रफा में उपस्थित ह़ाजियों एवं अन्य देशों के अन्य मुसलमानों को नरक से मुक्ति प्रदान करता है,इसी लिए उसके बाद जो दिन आता है वह समस्त मुसलमानों के लिए ईद का दिन है,चाहे वे अ़रफा के मैदान में उपस्थित हों अथवा न हों,क्योंकि उस दिन नरक से मुक्ति एवं क्षमा की प्राप्ती में वे एक दूसरे के साथ होते हैं[6]समाप्त।

---

[3] इसे मुस्लिम(1162)ने वर्णित किया है।

[4] इसे मुस्लिम(1384)ने वर्णित किया है।

[5] इसे अह़मद(2/224)ने वर्णित किया है और अल्बानी ले"सह़ीहत्तरग़ीब वत्तरहीब"में ह़दीस संख्या(1153)के अंतर्गत सह़ी कहा है।

[6] "लत़ाएफुल मआ़रिफ".अलमजलिस अस्सानी फी योमे अ़रफा मआ़ योमुन्नहर

6.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि उस दिन की जाने वाली दुआ की स्वीकृति का संभावना अधिक होता है,अ़ब्दुल्लाह बिन अंमर बिन अलआ़स रजीअल्लाहु अंहोमा कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"सबसे अच्छा प्रार्थना अ़रफा वाले दिन का प्रार्थना है और में ने अबतक जो कुछ(ज़िकर के रूप में)कहा है और मुछसे पूर्व जो दूसरे संदेशवाहकों ने कहा है उनमें सबसे अच्छी दुआ यह हैः

لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك، وله الحمد، وهو على كل شيء قدير[7]

7.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि वह ज़ुलहिज्जा के दस दिन के मध्य होता है,जो कि वर्ष के समस्त दिनों से सर्वश्रेष्ठ दिन हैं,जैसा कि इब्ने अ़ब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"ज़ुलहिज्जा के दस दिनों के तुलना में अन्य कोई दिन ऐसे नहीं हैं जिनमें पुण्य के कार्य अल्लाह को इन दिनों से अधिक प्रिय हों" ।लोगों ने पूछाःअल्लाह के रसूल!अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना भी नहीं?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना भी नहीं,सिवाए उस मोजाहिद के जो अपना प्राण एवं धन दोनों ले कर अल्लाह के मार्ग में निकला फिर किसी चीज के साथ वापस नहीं आया" ।[8]

8.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि उस दिन ह़ज का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ पूरा किया जाता है,जो कि अ़रफा में वोकूफ(ठहराउ)है,जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः"ह़ज अ़रफात में ठहरना है" ।[9]

9.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि उस दिन मुसलमान संसार के विभिन्न छेत्रों से आकर एक ही स्थान पर **इकठ्ठा** होते हैं,और एक ही फरीज़ा को करते हैं जो न किसी अन्य दिन में अदा किया जा सकता है,न किसी अन्य स्थान पर और न किसी में यह सामूहिक प्रदर्शन होता है,यह इस्लामी शआ़एर(प्रतीक)के प्रकट एवं उसकी उच्चता का दृश्य है,तथा यह शैतान के पराजित का कारण है,क्योंकि वह देखता है कि(बंदों पर)कृपा एवं आशीर्वाद उतर रहे हैं और(उनके)पापों को क्षमा प्रदान किया जा रहा है(जिस के कारण उसे पराजित होती है)।

..ए अल्लाह के बंदो!यह वह दस विशेषताएं हैं जिनसे अल्लाह ने अ़रफा के दिन को चित्रित किया है,इसकी महानता व पतिष्ठा एवं स्थान को देखते हुए,इस लिए हमें इन महत्वों को पुण्य

---

[7] इसे तिरमिज़ी(3585)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने"अस्सहीहा" (1503)में इसे ह़सन हका है।

[8] इसे बोखारी(969)और अह़मद(1/338-339)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं।

[9] इसे नेसाई(3016)आदि ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन यईर रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और अल्बानी ने इसे सही़ कहा है।

के कार्य के माध्यम से प्राप्त करने के लिए अल्लाह की सहायता प्राप्त करनी चाहिए,इनकी शुभकामनाओं से अपने दामन को भरने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए,क्योंकि आज कार्य का अव्सर है और हिसाब नहीं,और कल हिसाब होगा और कार्य का अव्सर नहीं:

- ﴿سابقوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها كعرض السماء والأرض أعدت للذين آمنوا بالله ورسله﴾.

अर्थात:आओ दौड़ो अपने रब के क्षमा की ओर और उस स्वर्ग की ओर जिसकी विस्तीर्णता आकाश एवं धर्ती की विस्तीर्णता के बराबर है,यह उनके लिए बनाई गई है जो अल्लाह पर और उसके संदेशवाहकों पर ईमान रखते हैं।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सबको क़ुरआन की बरकत से माला.माल फरमाए,मुझे और आप सबको उसकी आयतों एवं नीतियों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआ़ला से क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

إن الحمدلله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله.

أما بعد:

ए मोमिनो!आप यह जान लें कि अ़रफा के दिन दुआ करने का जो महत्व आया है,वह समस्त संसार के लिए समान है,यह महत्व केवल उन ह़ाजियों के लिए विशेष नहीं जो अ़रफात में वोक़ूफ(ठहराउ)करते हैं,क्योंकि यह समय का महत्व है,प्रनंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि जो ह़ाजी अ़रफा के मैदान में होते हैं उन्हें स्थान एवं समय दोनों का महत्व प्राप्त होता है।

अल्लाह के बेंदो!अ़रफा के दिन जिकर व अज़कार और दुआ व प्राथना करने में जो चीज़े सहायक हो सकती हैं,उनमें यह भी है कि शक्ति के अनुसार ज़ोहर के बाद से मग़रिब तक मस्जिद में ठहरा जाए,अ़रफा के दिन यह भी धार्मिक कार्य है कि नमाज़ के पश्चात निश्चित तकबीरे का पालन किया जाए,ग़ैर ह़ाजियो के लिए यह तकबीर

अ़रफा के दिन फजर की नमाज़ से लेकर तेरा जीलह़िज्जा के दिन अ़सर की नमाज़ की समाप्ति तक है,रही बात ह़ाजियों की तो उनके लिए तकबीर अ़रफा के दिन ज़ोहर और अ़सर की नमाज़ पढ़ के प्रारंभ होता है,जब ह़ाजी नमाज़ पढ़ले तो तीन बार इस्तिग़फार करे और कहे

(اللهم أنت السلام ومنك السلام، تباركت يا ذا الجلال والإكرام)

फिर यह कहते हुए तकबीर शुरू करे:

(الله أكبر، الله أكبر، لا إله الا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد).

ए मोमिनो!यह एक बड़ा अव्सर और हमारे महान एवं सम्मानित परवरदिगार के आशीर्वाद का झोंका है जो साल में एक बार ही आता है,हमें अल्लाह के सामने खैर एवं भलाई का प्रदर्शन करना चाहिए,प्रार्थना,ज़िकर एवं दुआ का पालन करना चाहिए,क्योंकि बंदा जब अल्लाह से एक बित्ता निकट होता है तो अल्लाह तआ़ला उससे एक गज़ निकट होता है,और बंदा जब अल्लाह से एक गज़ निकट होता है तो अल्लाह तआ़ला उससे दो गज़ निकट होता है,जो इसकी ओर चल कर जाता है,अल्लाह तआ़ला उसके निकट दौड़ कर जाता है,यह ह़दीस अल्लाह तआ़ला के महान कृपा एवं दया पर साक्ष्य है और इस बात पर भी कि बंदे खैर व भलाई और पुण्य के कार्य के माध्यम से अल्लाह तआ़ला से निकट होने के लिए जेतना पहल करता है,उससे कहीं अधिक तेज़ी के साथ अल्लाह तआ़ला खैर व भलाई ,एवं दानशीलता के माध्यम से बंदों की ओर बढ़ता है।

-हे अल्लाह!तू अपने बंदे और रसूल मोह़म्मद पर कृपा एवं सलामती भेज,तू उनके उत्राकिरियों,अनुयायियों एवं क़यामत तक निष्कपटता के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

-हे हमारे रब!हम ने अपना बड़ा हानी कर लिया और तेरे अतिरिक्त कोई पापों को क्षमा प्रदान करने वाला नहीं,तू हमें अपना क्षमा प्रदान कर और हम पर कृपा फरमा,निसंदेह तू अति अधिक क्षमा करने वाला और अति कृपा करने वाला है।

-हे अल्लह!हमें अ़रफा के दिन तक पहुंचा और उस दिन जिकर करने,तेरा शुक्र अदा करने और उत्तम तरीके से प्रार्थना करने में हमारी सहायत फरमा।

-हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربنا رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अर्रसी

६ जुलह़िज्जा **१४४१** ह़िजरी

जूबैल, सउूदी अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः

फैजुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com